तबले का उद्भव और विकास

अनिल कुमार शर्मा[1], प्रो. शर्मिला टेलर[2], प्रो. सरोज घोष[3]
1 शोधार्थी, मंच कला विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
2 शोध निर्देशिका, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
3 सह शोध निर्देशिका, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

सार–संदर्भ

वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रचलित और सर्वथा सुलभ अवनद्ध वाद्य तबला के उद्भव के विषय में आज भी सभी विद्वान एक मत नहीं हो सके हैं। कुछ ने इसे अमीर खुसरो से सम्बद्ध बतलाया तो कुछ ने तबले का विकास प्राचीन मृदंग से माना है। तबला का विकास पंजाब और दिल्ली के संगीतज्ञों द्वारा समय–समय पर होता रहा और इसी क्रम में दिल्ली से अन्य चार घरानों या शैलियों का प्रादुर्भाव हुआ, जो आज भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। आज तबले की जो स्थिति है उसके लिए पंजाब और दिल्ली घराने के उस्तादों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कुंजी शब्द : तबला, घराना, अमीर खुसरो, मृदंग।

वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रचलित और सर्वथा सुलभ अवनद्ध वाद्य तबला के उद्भव के विषय में आज भी सभी विद्वान एक मत नहीं हो सके हैं। सभी विद्वानों के द्वारा अपने–अपने तर्क प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। कुछ तर्क तो हमें तबला के उद्भव के लिए तथ्य के करीब ले जाते हैं, वहीं कुछ एक अर्थहीन भी साबित होते हैं। तबला के उद्भव के संदर्भ में प्राप्त तर्क इस प्रकार हैं–

मोहम्मद करम इमाम कृत 'मादनुल मूसीकी' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 'इमाम साहब ने जिस 'तब्ल' नामक वाद्य को हजरत अमीर खुसरो से सम्बद्ध बतलाया है, वह वाद्य 'तबला' न होकर स्पष्टतः 'धौंसा' या 'बड़ा नगाड़ा' है। इसी 'तब्ल' को अनेक परवर्ती संगीतज्ञों की भांति आचार्य वृहस्पति ने भी भ्रम से 'तबला' समझा और सम्भवतः इसीलिए भूल से हकीम मोहम्मद करम इमाम को इस मत का सर्वप्रथम प्रचारक समझा जाने लगा।'[1] उपर्युक्त तर्क से स्पष्ट होता है कि तबला के आविष्कार का अमीर खुसरो से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके काल में प्रयुक्त होने वाला वाद्य 'तब्ल', वर्तमान 'तबला' से सर्वथा भिन्न था।

डॉ0 लालमणि मिश्र के अनुसार, 'प्राचीन ग्रन्थों में कहीं भी तबला नामक वाद्य का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। यहाँ तक कि 'संगीत पारिजात' और 'वाद्य प्रकाश' जैसे उत्तर मध्यकालीन ग्रन्थों में भी तबले का उल्लेख नहीं हुआ है। तबले के संदर्भ में इस अन्धकारमय स्थिति का लाभ उठाकर मुसलमान वादकों ने तबले का जन्मदाता भी अमीर खुसरो को बना दिया। अतएव जब तक इस वाद्य की उत्पत्ति तथा विकास का कोई सूत्रपात न हो, तबतक अमीर खुसरो ही इसके जन्मदाता ठहरते हैं। किन्तु जैसा कि सितार के विकास के सन्दर्भ में कहा गया है, अमीर खुसरो के किसी अन्तः साक्ष्य तथा वाह्य साक्ष्य से यह पता नहीं चलता कि उन्होंने सितार अथवा तबले का आविष्कार किया। कोई विद्वान इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता कि 'तबला' अमीर खुसरो की ईजाद है।'[2]

1 शुक्ला, डॉ0 योगमाया, तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियाँ, संस्करण–2003, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या– 59–60
2 मिश्र, डॉ0 लालमणि, भारतीय संगीत वाद्य, संस्करण– 2002, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 157

डॉ0 मिश्र जी आगे लिखते हैं कि 'वास्तव में तबले का विकास प्राचीन मृदंग से ही हुआ है। यह मृदंग तीन भागों में होता था, उसका एक भाग गोद में तथा अन्य दो भाग ऊर्ध्वमुखी रखे जाते थे। मृदंग के तीन भागों में छठीं शताब्दी से परिवर्तन होने लगा तथा उसके बाद कुछ दिनों तक एक गोद का भाग तथा एक खड़ा वाला भाग प्रयुक्त होता रहा और अन्त में मृदंग का वह एक ऊर्ध्वमुखी भाग भी हट गया और केवल उसका आंकिक भाग ही मृदंग अथवा मादल नाम से प्रचलित रह गया। इसी काल में प्राचीन मृदंग के दोनों ऊर्ध्वमुखी भागों का अथवा आंकिक भाग का ही दो ऊर्ध्वमुखी के रूप में अलग से वादन होता रहा, किन्तु शास्त्र सम्मत न होने के कारण तथा उसका विशेष नाम न होने के कारण उसका उल्लेख शास्त्र ग्रन्थों में नहीं किया गया। यह प्रयोग संदिग्ध अवस्था में लगभग सत्रहवीं शताब्दी तक चलता रहा। उस समय इस वाद्य का प्रचार उन निम्न स्तरीय लोगों में था, जो इसे कमर में बाँधकर बेड़िनों (निम्न स्तर की नर्तकियों) के नाच के साथ बजाते थे।'[1]

भारतीय संगीत वाद्य ग्रन्थ में एक अन्य स्थान पर पण्डित जी 'आइने अकबरी' का संदर्भ देते हुए तबला के विकास को 'आवज' से जोड़ते हुए संगीतसार में हुडुक का वर्णन प्रकट करते हैं और इसी क्रम में तबले के विकास के लिए हुड़का की भी संभावित पुष्टि करते हैं।

विद्वान लेखक मनोहर भालचन्द्र मराठे जी अल्लाउद्दीन खिलजी की शासनकाल का संदर्भ देते हुए लिखते हैं कि 'उस काल के बारे में कहा जाता है कि अल्लाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के देवगिरी राज्य को जीतकर वहाँ के प्रसिद्ध गायक–वादकों को अपने साथ दिल्ली लाया। उस समय उत्तर भारत में मृदंग (पखावज) तथा दक्षिण भारत में मृदंगम् का संगीत के ताल–वाद्यों में शीर्ष स्थान था। गुस्से में मृदंग (पखावज) को तोड़ डाला गया होगा तथा ताल–वादकों को 'तबला' वाद्य बजाने को मजबूर किया गया होगा। परन्तु मृदंग (पखावज) के दो भाग करके 'तबला' की उत्पत्ति करना सम्भव नहीं है।'[2]

उपर्युक्त संदर्भ में मराठे जी ने मृदंग (पखावज) को काटकर तबला के आविष्कार का संदर्भ देते हुए इस बात का खण्डन भी किया है कि किसी वादक द्वारा वाद्य को काटकर अन्य वाद्य की निर्मिति करना तथा काटने के पश्चात भी वाद्य का सुर में बोलना संभव नहीं है। इस प्रकार तबला की उत्पत्ति के संदर्भ का यह कथन भी सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध होता है। विद्वान मराठे जी द्वारा की गई पुष्टि हमें लेखक की जागरुक सोच का प्रमाण देती है।

डॉ. आबान ई. मिस्त्री जी के अनुसार, 'अति प्राचीन काल से ही कई वाद्य हमारे सामान्य जनजीवन के सांस्कृतिक एवं कलात्मक पक्षों से सम्बन्धित रहे हैं। भुवनेश्वर, कोणार्क, अमरावती, बादामी आदि गुफाओं तथा मंदिरों की शिल्प मूर्तियों में हमें ऐसे अनेक ताल–वाद्यों के चित्र मिलते हैं, जिनका स्वरूप आज के तबला–जोड़ी जैसा है। ये गुफाएं लगभग ईसापूर्व 200 से लेकर 16वीं शती के काल की हैं। ये मूर्तियाँ एवं शिल्प उस समय के जन–जीवन के प्रतीक हैं। कलाकार अपने युग का वर्णन अपनी कला से करता है। इतना ही नहीं तबले से साम्य रखता हुआ, महाराष्ट्र का एक लोक ताल वाद्य है, जिसे 'सम्बल' कहते हैं, इसका प्रयोग वहाँ के लोक संगीत में सदियों से चला आ रहा है। 'दर्दुर' एक प्राचीन

1 मिश्र, डॉ0 लालमणि, भारतीय संगीत वाद्य, संस्करण– 2002, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 158
2 मराठे, मनोहर भालचन्द्रराव, ताल–वाद्य शास्त्र, संस्करण– 1991, शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर, म0प्र0, पृष्ठ संख्या– 4–5

अवनद्ध वाद्य है। इसकी चर्चा महर्षि भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में की है। इसके अतिरिक्त 'नक्कारा' भी एक ऐसा वाद्य है, जो तबले की जोड़ी से मिलता–जुलता है।'[1]

तबले के उद्भव के सम्बन्ध में तर्क देते हुए आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव जी कहते हैं, 'उत्तर भारत की गायन शैली में ख्याल गायन शैली का प्रवेश 14वीं सदी से प्रारम्भ हो गया था। यह युग तबले के लिए विशेष महत्व का है। कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। ख्याल और ठुमरी जैसी श्रृंगारिक एवं मधुर गायन शैली के लिए पखावज वाद्य उपयुक्त न था, अतः किसी अन्य वाद्य की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी और यही आवश्यकता तबले के जन्म और विकास की जननी बनी।'[2]

श्री भगवत शरण शर्मा कृत 'ताल प्रकाश' की प्रस्तावना में पं. किशन महाराज जी का मत कुछ इस प्रकार मिलता है, 'कितने लेखकों का मत यह है कि खब्बे हुसैन ढोलकिया जब सुप्रसिद्ध मृदंग वादक श्री कुदऊ सिंह जी (कुदौ सिंह) से बजाने पराजित हुए तो कुदौ सिंह जी ने तलवार से उनकी उंगलियाँ काट डालीं। इस पर खब्बे हुसैन ने दाहिने को बाएं हाथ से अभ्यास करके बोलों में काफी मुलायमियत पैदा की, जिसे सुनकर कुदौ सिंह बहुत प्रसन्न हुए। तदुपरान्त खब्बे हुसैन ने ही मृदंग काटकर खड़ा कर दिया और उसका नाम 'तबला' रखा।'[3]

आज के युग में प्रायः सभी संगीतज्ञ और तबले से परिचित सभी लोग सिधार खाँ या सुधार खाँ को तबला वाद्य का आविष्कारक मानते हैं और प्रायः सभी घरानों के तबला–वादक सुधार खाँ को तबला–वादन का मूल प्रवर्तक मानते हुए उनके वंशजों और शिष्यों से तबला–वादन की विभिन्न शैलियों का विकास मानते हैं। डॉ0 लालमणि मिश्र के अनुसार, 'सुधार खाँ का वास्तविक नाम सुधार खाँ नहीं था, बल्कि यह उनका उपनाम था और तबले में सुधार करने के कारण ही 'सुधार खाँ' उपनाम पड़ा।'[4]

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार, 'तबला का आविष्कार कब और किसने किया यह कह पाना मुश्किल है क्योंकि संगीत के इतिहास और प्राचीन लिखित सामग्री का अभाव रहा है। ऐसे में हम इसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि तबला का वर्तमान स्वरूप काल–क्रमानुसार निरन्तर परिवर्तन ओर परिवर्धन का परिणाम है। 19वीं सदी के पूर्वार्ध में तबला इतना आकर्शक और सर्वसुलभ नहीं था, जैसा कि वर्तमान में है।'[5]

तबला वाद्य के उद्गम के विषय में विभिन्न विद्वानों के पक्ष हमें भिन्न–भिन्न स्थानों पर ले जाकर खड़ा कर देते हैं, कुछ विचार जहाँ तर्कपूर्ण प्रतीत होते हैं वहीं कुछ पर विश्वास कर पाना कठिन प्रतीत होता है। फिर भी सभी विचारों का मंथन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि तबला का आविष्कार किसी एक व्यक्ति द्वारा या एक समय पर नहीं हुआ होगां सम्भवतः यह सतत् विकास का परिणाम है।

---

1 मिस्त्री, डॉ0 आबान ई0, पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं, द्वितीय संस्करण– 2000, स्वर साधना समिति, मुम्बई, पृष्ठ संख्या– 109

2 श्रीवास्तव, आचार्य गिरीश चन्द्र, भूतपूर्व प्रोफेसर तबला, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के द्वारा उनके आवास पर दिनांक 22 मार्च 2018 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य।

3 शर्मा, श्री भगवत शरण, ताल प्रकाश की प्रस्तावना, प्रस्तावना लेखक– पं0 किशन महाराज, तबला विद्, बनारस घराना, संस्करण– 1977, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0प्र0।

4 मिश्र, डॉ0 लालमणि, भारतीय संगीत वाद्य, संस्करण– 2002, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 161

5 श्रीवास्तव, आचार्य गिरीश चन्द्र, भूतपूर्व प्रोफेसर तबला, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के द्वारा उनके आवास पर दिनांक 22 मार्च 2018 को लिए गए साक्षात्कार से प्राप्त तथ्य।

ख्याल गायकी का प्रचार–प्रसार 14वीं–15वीं शताब्दी तक हो चुका था। आज की भाँति उस समय भी लोग कठिन से सरल की ओर अग्रसर होते हुए ध्रुवपद–धमार के स्थान पर ख्याल को तरज़ीह देने लगे थे। इसी समय तबला अपनी विकास की रफ्तार को पाने में सफल हुआ। जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि ख्याल गायकी के संगति के लिए पखावज की जगह तबला (मुलायम बोलों वाला वाद्य) अधिक उपयुक्त था। अतः धीरे–धीरे तबला शास्त्रीय, सुगम और लोक सभी प्रकार के संगीत के साथ–संगति में प्रयुक्त होने लगा।

तबला के विकास में दिल्ली और पंजाब के संगीतज्ञों का बराबर योगदान रहा। दिल्ली में जहाँ सिधार खाँ और उनकी वंश और शिष्य परम्परा ने तबला को जन–जन तब प्रचारित किया वहीं पंजाब में लाला भवानी दास और उनकी वंश और शिष्यपरम्परा ने खुले बोलों से युक्त शैली को आगे बढ़ाया।

पुस्तक ताल–प्रकाश के प्रस्तावना में पं0 किशन महाराज ने लिखा है कि 'उ0 सिधार खाँ से पूर्व भी पंजाब में तबला प्रचलित था, जिसका प्रमाण एक प्राचीन किंवदन्ती से प्रकट होता है। वह यह है कि सिधार खाँ के पौत्र उ0 मोंदू खाँ की शादी पंजाब के किसी तबला–वादक की लड़की से हुई थी। इस अवसर पर उ0 मोंदू खाँ को पंजाबी गतें दहेज़ में दी गईं थीं।'[1]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तबला का विकास पंजाब और दिल्ली के संगीतज्ञों द्वारा समय–समय पर होता रहा और इसी क्रम में दिल्ली से अन्य चार घरानों या शैलियों का प्रादुर्भाव हुआ, जो आज भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। आज तबले की जो स्थिति है अर्थात तबला वाद्य ने जो मुकाम पाया है, उसके लिए हमें पंजाब और दिल्ली घराने के उन उस्तादों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। उन्होंने उस स्थिति में भी संगीत और खास तौर से तबला को अपने वंशजों और शिष्यों को सिखलाया, जिससे आज उनकी बनाई कड़ी के माध्यम से हमें उनकी विशिष्ट शैली और रचनाओं की जानकारी मिलती है। संगीत जगत उन पुण्यात्माओं का सदा आभारी रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शुक्ला, डॉ0 योगमाया, तबले का उद्‌गम, विकास और वादन शैलियाँ, संस्करण– 2003, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

मिश्र, डॉ0 लालमणि, भारतीय संगीत वाद्य, संस्करण– 2002, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

मराठे, मनोहर भालचन्द्रराव, ताल–वाद्य शास्त्र, संस्करण– 1991, शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर, म0प्र0

मिस्त्री, डॉ0 आबान ई0, पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं, द्वितीय संस्करण– 2000, स्वर साधना समिति, मुम्बई

शर्मा, श्री भगवत शरण, ताल प्रकाश की प्रस्तावना, प्रस्तावना लेखक– पं0 किशन महाराज, तबला विद्, बनारस घराना, संस्करण– 1977, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0प्र0।

साक्षात्कार

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

1 शर्मा, श्री भगवत शरण, ताल प्रकाश की प्रस्तावना, प्रस्तावना लेखक– पं0 किशन महाराज, तबला विद्, बनारस घराना, संस्करण– 1977, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0प्र0।